बाइबल टीचर

वर्ष 21 जुलाई 2024 अंक 8

सम्पादकीय

आपस का मसीही प्रेम

यीशु ने अपने चेलों को कहा था कि मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं कि एक दूसरे से प्रेम रखो; जैसा मैंने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो (यूहन्ना 13:34-35)। प्रेम एक ऐसा शब्द है जो सब भाषाओं और सारे जगत में इस्तेमाल किया जाता है। यदि इस संसार में प्रेम नहीं होता तो संसार का क्या हाल होता? बाइबल प्रेम के विषय में कहती है कि यदि ''मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियां बोलूं, और प्रेम न रखूं तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल और झंझनाती हुई झांझ हूं। और यदि मैं भविष्यवाणी कर सकूं और सब प्रकार के ज्ञान को समझूं, और मुझे यहां तक पूरा विश्वास हो कि मैं पहाड़ों को हटा दूं, परन्तु प्रेम न रखूं तो मैं कुछ भी नहीं। और यदि मैं अपनी सम्पुर्ण संपत्ति कंगालों को खिला दूं, या अपनी देह जलाने के लिए दे दूं, और प्रेम न रखूं तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं प्रेम धीरजवन्त है, और कृपालु है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं, वह अनरिती नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता, कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतिती करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है'' (1 कुरि. 13:1-7)।

बाइबल की शिक्षा यह है कि हम आपस में प्रेम से रहें। आज अकसर लोग कहते हैं परमेश्वर प्रेम है। यह बात सत्य है कि परमेश्वर प्रेम है और सबसे प्रेम करता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि उसका प्रेम महान है, और वह चाहता है कि उसके लोग भी आपस में प्रेम रखें। बड़े ही दुख की बात है कि मसीही बनने के बाद भी हम आपस के प्रेम को भूल जाते हैं। आपस में एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या रखना एक आम बात हो गई है। हमारे अंदर वो बात नहीं आती जो समय अनुसार आनी चाहिए। परमेश्वर ने हमसे तब प्रेम किया जब हम पापी थे (रोमियों 5:8)।

प्रेरित यूहन्ना मसीहियों को लिखते हुए कहता है, ''हे प्रियों, हम आपस में प्रेम रखें; क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है। और जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है; और परमेश्वर को जानता है। जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है वह इससे प्रकट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं। प्रेम इसमें नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया, पर इसमें है कि उसने हमसे प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा। हे मित्रों, जब परमेश्वर ने हमसे ऐसा प्रेम किया, तो हमको भी आपस में प्रेम रखना चाहिए (1 यूहन्ना 4:7-11)। मसीह की कलीसिया अपने पहिले जैसे प्रेम को अर्थात् अपने प्रभु के प्रति तथा मसीही भाईयों के प्रति भूलती जा रही है। जरा सोचिए जब आप एक मसीही बने थे, तब में और अब में क्या आपके प्रेम में कमी तो नहीं आई है?

प्रेरित पौलुस 1 कुरि. 12 में बताता है कि आत्मिक वरदान जो भाईयों को मिले थे उसके कारण उनमें आपस में भेदभाव हो रहा था तथा उससे प्रेम में कमी आ रही थी। कुछ सदस्य अन्य भाषा बोलने पर घमण्ड़ कर रहे थे। पौलुस ने उनसे कहा, मैं तुम्हें और भी उत्तम बात बताता हूं और वो है प्रेम (1 कुरि. 12:31)। कलीसिया में प्रेम का होना बहुत आवश्यक है, और इसके लिये सब सदस्यों को प्रयास करना चाहिए। हम यदि अच्छा और उत्तम प्रचार करते है तो वह सब प्रेम से होना चाहिए (इफि. 4:16)। लोगों को सत्य सुसमाचार के बारे में बतायें परन्तु यह सब प्रेम से होना चाहिए।

कलासिया को दृढ़ रखने के लिए आज प्रेम की आवश्यकता है। कुछ सदस्य अपने बुरे व्यावहार के कारण फूट फैलाने की कोशिश करते हैं जोकि अनुचित है। ऐसे हालात उत्पन्न न होने दें जिससे कलीसिया में फूट हो। कई बार प्रचारक भी यहां गलती कर बैठते हैं। वे उन्हें अपना शत्रु समझने लगते हैं जिनसे उनके विचार नहीं मिलते। यह एक गलत व्यावहार है। कई बार हम सच्चाई सिखाते समय अपने आप में संयम नहीं रखते, और उस आत्मा को खो देते हैं जिसे हम बाइबल की सच्चाई पर लाना चाहते हैं।

हमारे परिवारों में भी आज प्रेम की कमी है। पति-पत्नी भी आज एक दूसरे से दूर हैं और इसका कारण है आपस के प्रेम में कमी। आज इतने सारे तलाक हो रहे हैं और इसका कारण आपस के प्रेम में कमी है। बाइबल भी यह शिक्षा देती है कि पत्नियां अपने पतियों से प्रेम रखें, क्योंकि पति पत्नी का सिर है। इसी प्रकार से पति अपनी अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखे (इफि. 5)। सच्चे प्रेम में केवल अपनी मर्ज़ी नहीं बल्कि एक दूसरे की सहमति से चलना पड़ता है।

पौलुस के इन शब्दों पर ध्यान दीजिये ''सो मैं जो प्रभु में बन्धुआ हूं तुम से बिनती करता हूं कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो। अर्थात् सारी दीनता और नम्रता सहित और धीरज धरकर प्रेम से एक-दूसरे की सह लो, और मेल के बंधन में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो (इफि. 4:1-3)।

जगत की ज्योति मैं हूँ

(यूहन्ना 8:12)

सनी डेविड

परमेश्वर के वचन, अर्थात् बाइबल अध्ययन के इस बहुमूल्य समय में मैं आपका ध्यान एक बार फिर से प्रभु यीशु मसीह के ऊपर दिलाने जा रहा हूं। पवित्र शास्त्र में अनेक स्थानों पर यीशु को ज्योति कहकर सम्बोधित किया गया है। ज्योति, प्रकाश या रौशनी एक ऐसी वस्तु है जिसकी तुलना किसी भी अन्य वस्तु से नहीं की जा सकती। यह अत्यन्त ही आवश्यक, महत्वपूर्ण, तथा गुणों से भरपूर वस्तु है। उस से हमें स्वास्थय तथा जीवन मिलता है। हम ज्योति के बिना नहीं रह सकते। वह हमें मार्ग दिखाती है, और हमें अनेक संकटों से बचाती है। अनेक ऐसे स्थान हैं जहां घोर अन्धकार है और इस कारण हम वहां नहीं जाना चाहते। परन्तु ज्योंति अन्धकार को दूर करती है। संसार में लगभग सभी वस्तुएं किसी न किसी रूप में ज्योति से सम्बन्ध रखती हैं। ज्योति की अनुपस्थिति में कुछ भी वर्तमान रहना असम्भव है। क्या इस सच्चाई की पुष्टि इस बात से नहीं होती कि जब आदि में परमेश्वर ने जगत की सृष्टि की तो सर्वप्रथम उसने ज्योति की ही रचना की!

इसलिये इसमें कोई संदेह नहीं, कि ज्योति के इन विशेष तथा महत्वपूर्ण गुणों को दृष्टि में रखकर, पवित्र शास्त्र में यीशु को जगत की ज्योति कहकर सम्बोधित किया गया है। प्रभु यीशु के सुसमाचार का लेखक, यूहन्ना, जिसकी पुस्तक में हम यीशु को मार्ग, सच्चाई, जीवन, तथा द्वार, इत्यादि, के रूप में देखते हैं, हमें अपनी इसी पुस्तक के पहिले अध्याय में यीशु के बारे में इन शब्दों में बताता है:

"आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई। उसमें जीवन था; और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी। और ज्योति अन्धकार में चमकती है, और अन्धकार ने उसे ग्रहण न किया . .. वह जगत में था, और जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, और जगत ने उसे नहीं पहिचाना। वह अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया। परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। वे न तो लोहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं। और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।"

इसी पुस्तक के तीसरे अध्याय में, जहां प्रभु यीशु नीकुदेमुस नाम के एक मनुष्य को स्वर्ग के राज्य के भीतर प्रवेश पाने के सम्बन्ध में नए सिरे से जन्म लेने के विषय पर बता रहा था, हम आगे देखते हैं, कि यीशु ने कहा : "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे,

वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा, कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिये कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। और दण्ड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उनके काम बुरे थे। क्योंकि जो कोई बुराई करता है वह ज्योति से बैर रखता हैं, और ज्योति के निकट नहीं आता। ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए। परन्तु जो सच्चाई पर चलता है, वह ज्योति के निकट आता है, ताकि उसके काम प्रगट हों, कि वे परमेश्वर की ओर से किए गए हैं।" (यूहन्ना 3:16-21)।

फिर, यूहन्ना आगे अपनी पुस्तक के आठवें अध्याय में हमें एक घटना के विषय में बताता है जहां एक स्त्री व्यभिचार करते पकड़ी गई थी। लोग उसे मूसा की व्यवस्था के आधार पर पत्थरवाह करके मार डालना चाहते थे। किन्तु जब उन्होंने यीशु से पूछा, कि उसका इस विषय में क्या विचार है? तो यीशु ने उन से कहा, कि तुम में से जो कोई भी निष्पाप हैं वही उस स्त्री को सबसे पहिले पत्थर मारे। इस पर लिखा है, कि वे लोग सब उसे यों ही छोड़कर चले गए, और यीशु ने उस से कहा, कि जा और फिर पाप न करना। और आगे हम यूं पढ़ते हैं, "तब यीशु ने फिर लोगों से कहा, जगत की ज्योति मैं हूं जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।" (यूहन्ना 8:12)।

थोड़ा और आगे चलकर, इसी पुस्तक के 12 वें अध्याय में हम प्रभु यीशु द्वारा कहे उसके इन शब्दों को पढ़ते हैं: "जो मुझ पर विश्वास करता है, वह मुझ पर नहीं, बरन मेरे भेजने वाले पर विश्वास करता है। और जो मुझे देखता हैं, वह मेरे भेजनेवाले को देखता है। मैं जगत में ज्योति होकर आया हूं ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास करे, वह अन्धकार में न रहे। यदि कोई मेरी बातें सुनकर न माने, तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता, क्योंकि मैं जगत को दोषी ठहराने के लिये नहीं, परन्तु जगत का उद्धार करने के लिये आया हूं।" (यूहन्ना 12:44-47)।

सो इस प्रकार हम देखते हैं कि परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को जगत में ज्योति कि नाई भेजा। वह एक ऐसे संसार में आया जो पाप तथा अधर्म के अन्धकार में डूबा हुआ था। यद्यपि अधिकतर लोगों ने उसे स्वीकार नहीं किया, क्योंकि वे अन्धकार से प्रेम करते थे और उसी के बीच रहना चाहते थे किन्तु जितनों ने उसे स्वीकार किया उन्होंने उसके द्वारा नया जीवन पाया। ज्योति की ही नाई प्रभु यीशु हमारे ऊपर अनेक बातें प्रगट करता है।

वह हमारे ऊपर प्रगट करता हैं, कि प्रत्येक मनुष्य अपने पापों में खोया हुआ, परमेश्वर से दूर और अलग है, किन्तु परमेश्वर मनुष्य से प्रेम करता है और उसे बचाना चाहता है। सो उसने कहा, "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना 3:16)।

एक जगह उसने एक खोए हुए पुत्र का दृष्टान्त देकर यह प्रगट किया, कि इसी प्रकार परमेश्वर के लिये प्रत्येक मनुष्य अपनी इच्छा से खोया हुआ है। और उसे चाहिए

कि वह उस खोए हुए पुत्र की नाई अपने पिता के पास लौटने का निश्चय करे, और यदि मनुष्य ऐसा करेगा तो परमेश्वर उस खोए हुए पुत्र के पिता के नाई उसे स्वीकार करने को हमेशा तैयार है। (लूका 15)।

अपने उपदेशों में उसने प्रगट किया कि मनुष्य को अपने जीवन में सबसे पहिला स्थान उन वस्तुओं को देना चाहिए जो परमेश्वर की हैं। उसने कहा, "अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्‌ठा न करो; जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्‌ठा करो, जहां न तो कीड़ा और न कोई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं। क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा ... इसलिये पहिले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।" (मत्ती 6:19 तथा 33)।

पृथ्वी पर मनुष्य के जीवन के उद्देश्य को उसने यह कहकर प्रगट किया: "तुम पृथ्वी के नमक हो; परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा? फिर वह किसी काम का नहीं, केवल इसके कि बाहर फेंका जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए। तुम जगत की ज्योति हो; जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता। और लोग दिया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं परन्तु दीवट पर रखते हैं, तब उस से घर के सब लोगों को प्रकाश पहुंचता है। उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।" (मत्ती 5: 13-16)।

फिर हम देखते हैं, कि क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा यीशु ने परमेश्वर के अद्‌भुत् प्रेम को हम पर प्रगट किया। बाइबल में एक स्थान पर यूं लिखा है, "परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों 5:8)।

इसी प्रकार, अपने पुनरूत्थान के द्वारा प्रभु यीशु ने जगत पर यह प्रगट किया कि वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है। (रोमियों 1:4) पुनरूत्थान के ही द्वारा यीशु ने यह भी प्रगट किया कि उसने मनुष्य के अंतिम बैरी, अर्थात् मृत्यु को पराजित किया है, क्योंकि वह सदा जीवित रहने के लिये फिर से जी उठा, और इसलिये, क्योंकि यीशु जी उठा इसी प्रकार एक दिन हम सब भी उसमें जिलाए जाएंगे। इस सच्चाई को यीशु ने यों कहकर प्रगट किया : "जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरूत्थान के लिये जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दण्ड के पुनरूत्थान के लिये जी उठेंगे।"

सो हम देखते हैं, मित्रो, कि यीशु हम पर अनेक बातें प्रगट करता है जिनका सम्बन्ध न केवल हमारे इसी जीवन से है, परन्तु आनेवाले जीवन से भी है। यही कारण है कि वह कहता है, कि, "जगत की ज्योति मैं हूं ; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।" (यूहन्ना 8:12)।

क्या आप उसके निमन्त्रण को स्वीकार करने के लिये तैयार हैं? उसके पीछे हो लेने के लिये मनुष्य को चाहिए कि वह अपने पूरे मन से उसमें विश्वास करे और अपने पापों से मन फेरकर उनकी क्षमा के लिये यीशु की आज्ञानुसार बपतिस्मा ले।

परमेश्वर उन सब को आशीष दे जो उसके वचन को सुनते और मानते हैं।

पवित्र आत्मा के काम

जे. सी. चोट

पवित्र आत्मा का यह विषय महत्वपूर्ण है क्योंकि बहुत से लोग पवित्र आत्मा और उसके काम के बारे में उलझन में हैं। एक ओर जहां बहुत से लोग उसे सिरे से नकारते हैं, वहीं कुछ इतनी हद कर देते हैं कि वे यह सिखाते हैं कि पवित्र आत्मा आज भी वैसे ही आश्चर्यकर्मों के द्वारा कार्य करता है, जैसे वह यीशु और प्रेरितों के समय में किया करता था और उनकी शिक्षा और दावों का आधार यही होता है। कई धार्मिक शिक्षकों के लिए परमेश्वरत्व के तीनों व्यक्तियों में पिता परमेश्वर और उद्धारकर्ता मसीह नहीं बल्कि केवल पवित्र आत्मा ही मुख्य आकर्षण होता है। पर बाइबल क्या कहती है?

वचन बताता है कि पवित्र आत्मा परमेश्वरत्व में तीसरा व्यक्ति है, यानी वह एक व्यक्तित्व यानी शख्सीयत है। परमेश्वर तथा यीशु की तरह ही वह भी अनादि है यानी वह सदा से है और सदा तक रहेगा। उसका योगदान सृष्टि की रचना और पुराने नियम के काल की सब बड़ी घटनाओं में था। इस पाठ में हम मसीह और प्रेरितों के समय में उसके काम के बारे में सीखेंगे।

मसीह के जन्म की ओर वापस जाने पर वचन में हम पढ़ते हैं कि "यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार से हुआ, कि जब उसकी माता मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हो गई, तो उनके इकट्ठा होने से पहले ही वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई। अतः उसके पति यूसुफ ने जो धर्मी था और उसे बदनाम करना नहीं चाहता था, उसे चुपके से त्याग देने का विचार किया। जब वह इन बातों की सोच ही में था तो प्रभु का स्वर्गदूत उसे स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा,

'हे यूसुफ! दाऊद की संतान, तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहां ले आने से मत डर, क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है। वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।'

यह सब इसलिये हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था, वह पूरा हो: 'देखो, एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा,' जिसका अर्थ है – परमेश्वर हमारे साथ।

तब यूसुफ नींद से जागकर प्रभु के दूत की आज्ञा के अनुसार अपनी पत्नी को अपने यहां ले आया; और जब तक वह पुत्र न जनी तब तक वह उसके पास न गया: और उसने उसका नाम यीशु रखा" (मत्ती 1:18-25)।

कृपया इस सब में पवित्र आत्मा की भूमिका को देखें। पवित्र आत्मा ने ही यशायाह भविष्यद्वक्ता को प्रेरणा देकर यह लिखवाया था कि "इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिन्ह देगा। सुनो, एक कुंवारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और

उसका नाम इम्मानुएल रखेगी" (यशायाह 7:14)। बाद में हम देखते हैं कि पवित्र आत्मा की सामर्थ से मरियम एक बालक को जन्म देती है। अंत में यह सब इसलिए हुआ ताकि भविष्यवक्ता के द्वारा जो वचन यहोवा की ओर से कहा गया था वह पूरा हो कि एक कुंवारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी, जिसका अर्थ है परमेश्वर हमारे साथ है।

लूका के पहिले अध्याय में जकर्याह तथा इलीशिबा के यहां भी पवित्र आत्मा की सामर्थ से एक बालक का जन्म हुआ था । उसका नाम यूहन्ना रखा गया और बाद में वह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के नाम से प्रसिद्ध हुआ क्योंकि वह परमेश्वर की इच्छा को मानने वालों को बपतिस्मा देता था। मसीह का अग्रदूत होने के कारण जिसे प्रभु का मार्ग तैयार करने के लिए भेजा गया था, उसने कहा, "मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे बाद आनेवाला है, वह मुझ से शक्तिशाली है; मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। उसका सूप उसके हाथ में है, और वह अपना खलिहान अच्छी रीति से साफ करेगा, और अपने गेहूं को तो खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं।"

"उस समय यीशु गलील से यरदन के किनारे यूहन्ना के पास उससे बपतिस्मा लेने आया। परन्तु यूहन्ना यह कह कर उसे रोकने लगा, मुझे तो तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तू मेरे पास आया है? यीशु ने उस को यह उत्तर दिया, अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है। तब उसने उसकी बात मान ली।"

"और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिए आकाश खुल गया, और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर के समान उतरते और अपने ऊपर आते देखा। और देखो, यह आकाशवाणी हुई यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं।" (मत्ती 3:11-17)।

जैसे कि हम ने पहले देखा, कि मरियम पवित्र आत्मा की सामर्थ से गर्भवती पाई गई थी, और इस प्रकार मसीह का जन्म संसार में हुआ। एक समझदार व्यक्ति के रूप में अब हम यीशु को यूहन्ना से बपतिस्मा (पानी में डुबकी) लेते हुए देखते हैं । पिता की स्वीकृति के प्रमाण के रूप में परमेश्वर का आत्मा उतरा और परमेश्वर ने कहा, "यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं अत्यंत प्रसन्न हूं।"

मत्ती 4:1 में वचन कहता है, "तब आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि इबलीस से उस की परीक्षा हो।" वह शैतान की चुनौतियों और परीक्षा का सामना कैसे कर पाया? हर बार उस ने पवित्रशास्त्र में से उत्तर दिये, जिसके लेखकों को पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरणा दी गई थी ।

यूहन्ना 3:34 में हम पढ़ते हैं कि यीशु को आत्मा नाप-नाप कर नहीं मिला था जिसका अर्थ है कि पवित्र आत्मा की सामर्थ की भरपूरी मिली, जिससे वह उस संसार में जिसमें काम करने वह आया था, काम कर सका। परन्तु इसे हम ऐसे भी

देखते हैं कि दूसरों को आत्मा नाप कर मिला था यानी उनके लिए इस की सीमाएं थीं कि वे पवित्र आत्मा की सामर्थ के साथ क्या कर सकते हैं ।

मसीह ने अपने प्रतिनिधि बनाने और अपने काम को आगे बढ़ाने के लिए बारह पुरुषों को चुना था। इन लोगों को प्रेरित कहा जाता था। प्रेरित होने की एक योग्यता यह थी कि वह यीशु की सेवकाई के आरम्भ से लेकर उसके जी उठने के समय तक बराबर उसके साथ रहा हो। यह विशेष शर्त इस बात को दिखाती है कि हमारे बीच में आज कोई प्रेरित नहीं है। धार्मिक जगत में कुछ लोग चाहे इस सम्मान को पाने का दावा करते हैं।

यह जानते हुए कि जी उठे प्रभु के रूप में वह स्वर्ग में पिता के पास लौट जाएगा, यीशु ने अपने प्रेरितों से कहा, “तौभी मैं तुम से सच कहता हूं कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊं तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा; परन्तु यदि मैं जाऊंगा, तो उसे तुम्हारे पास भेजूंगा।” (यूहन्ना 16:7)। सहायक की पहचान कराते हुए उसने फिर कहा, “परन्तु सहायक अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह सब तुम्हे स्मरण कराएगा” (यूहन्ना 14:26)।

यीशु की प्रतिज्ञा के अनुसार, प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिए जाने के बाद, सहायक अर्थात पवित्र आत्मा ने, कई काम करने थे (प्रेरितों 2)। उसने उनका सहायक होना था, उन्हें सब सत्य (सारी सच्चाई) का मार्ग बताना था, उन सब बातों को स्मरण कराना था जो यीशु ने उन्हें बताई थीं, उन्हें अन्य भाषाएं बोलने के योग्य बनाना था और लोगों को यकीन दिलाने के लिए कि उन्हें परमेश्वर की ओर से भेजा गया था, आश्चर्यकर्म करने थे।

परन्तु प्रेरितों ने उस सारे काम को जो किया जाना आवश्यक था, नहीं कर पाना था। प्रेरितों 6 में हम पढ़ते हैं कि प्रभु ने उन्हें चुने हुए चेलों पर हाथ रखने के योग्य बनाया ताकि उन्हें भी पवित्र आत्मा के द्वारा आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ मिल सके। एक ओर जहां प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला था और वे दूसरों पर हाथ रखने के द्वारा उन्हें आश्चर्यकर्म करने की शक्ति दे सकते थे, वहीं दूसरी ओर, वे लोग जिन्हें पवित्र आत्मा की सामर्थ प्रेरितों के उन पर हाथ रखने के द्वारा मिलती थी, दूसरों को आश्चर्यकर्म करने की शक्ति आगे नहीं दे सकते थे। अपने अध्ययन में इस पर हम आगे और सीखेंगे।

अंत में, प्रेरितों 2:38 के अनुसार पापों को धोने के लिए पानी में बपतिस्मा लेने के समय दूसरे सब लोगों को आत्मा का साधारण या गैर चमत्कारी सामर्थ मिला।

पवित्र आत्मा ने प्रेरितों के द्वारा और उनके द्वारा जिनके ऊपर प्रेरितों ने हाथ रखे थे, उन्हें आश्चर्यकर्म करने की शक्ति देने और परमेश्वर का वचन लिखने की प्रेरणा देने के द्वारा काम किया। उस वचन की शिक्षा के अनुसार नया नियम पूरा हो जाने के बाद आत्मा आज उस वचन की शिक्षा के अनुसार वचन के द्वारा, और हमारे साथ काम करता है।

बाइबल के अधिकार की ओर वापस

चार्ल्स बॉक्स

हर किसी को यह समझ होती है कि अधिकार या अथार्टी का अर्थ क्या होता है? जब कोई एक इंच, फुट, गज़, मीटर या किलोमीटर कहता है तो हमारे दिमाग में एकदम से कुछ निश्चित नाप या दूरी आ जाती है । नापने के लिए फुट या गज़ का इस्तेमाल किया जाता है क्योंकि उससे एक समान नापा जा सकता है। यदि बहुत से लोग फुटे के एक ही नाप को अलग-अलग जगहों पर उपयोग में लाकर चीज़ों को नापते हैं तो उन सब का नाप एक सा होगा।

धार्मिक जगत में आज की उलझन का कारण किसी एक नाप का न होना है। लेकिन कोई पूछ सकता है, "क्या सब लोग बाइबल को मानते या बाइबल में से नहीं बताते हैं?" मुझे यह कहते हुए दु:ख होता है कि सब लोग एक ही सुसमाचार का प्रचार नहीं करते हैं। हमारी प्रार्थना है कि हर कोई नये नियम की ओर और प्रभु यीशु मसीह के अधिकार की ओर लौट आए।

परमेश्वर का दिया अधिकार बहुत सरल है। सारा अधिकार परमेश्वर के पास है। वही इसका देने वाला है। "सबका एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सबके ऊपर, और सब के मध्य और सब में हैं" (इफिसियों 4:6)। परमेश्वर ने यीशु के द्वारा स्वयं को हम पर प्रकट किया और यीशु ने नये नियम में हमें उसका संदेश दे दिया।" पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप दादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भांति-भांति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें करके इन दिनों के अन्त में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं, जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि रची है" (इब्रानियों 1:1-2)।

परमेश्वर ने यीशु को सारा अधिकार दिया है। "यीशु ने उन के पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है" (मत्ती 28:18) । उस अधिकार से यीशु ने सारी सच्चाई में अगुआई करने के लिए प्रेरितों के ऊपर पवित्र आत्मा को भेजा था।" परन्तु जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो सुनेगा, वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा" (यूहन्ना 16:13)। बाइबल को लिखने के लिए सत्य के आत्मा ने सब सत्य में प्रेरितों की अगुआई की।

यीशु और उसकी शिक्षा ही हमारे जीवनों को चलाने वाली होनी चाहिए। वह हमारे साथ बात करता है परन्तु सीधे बोलकर नहीं, बल्कि नये नियम में लिखे अपने वचन के माध्यम से । बाइबल अध्ययन करने से हमारा विश्वास मज़बूत होता है और हमारे आचरण को दिशा मिलती है। "जिस से तुम पढ़कर जान सकते हो, कि मैं मसीह का वह भेद कहां तक समझता हूं" (इफिसियों 3:4)। जब मैं बाइबल की अथार्टी को मानता हूं तो मैं परमेश्वर के वचन की अथार्टी को भी मान रहा होता हूं। "उसने उन्हें ईश्वर कहा जिन के पास परमेश्वर का वचन पहुंचा, और पवित्र शास्त्र की बात असत्य नहीं हो सकती" (यूहन्ना 10:35)।

परमेश्वर बाइबल के माध्यम से बात करता है। बाइबल में परमेश्वर की वे आज्ञाएं हैं जिन्हें पवित्र आत्मा ने अपनी प्रेरणा देकर लोगों से लिखवाया। "यदि कोई मनुष्य अपने

आप को भविष्यद्वक्ता या आत्मिक जन समझे, तो यह जान ले, कि जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूं, वे प्रभु की आज्ञाएं हैं" (1 कुरिन्थियों 14:37)। परमेश्वर की इच्छा बता दी गई है। "अर्थात यह कि वह भेद मुझ पर प्रकाश के द्वारा प्रकट हुआ जैसा मैं पहले संक्षेप में लिख चुका हूं" (इफिसियों 3:3)। जब मैं निष्कपट मन से बाइबल को पढ़ता हूं तो मुझे इसमें से परमेश्वर की इच्छा का पता चलता है।

नया नियम शक्तिशाली है । यह उनका उद्धार करता है, जो इसे बोए गए वचन के रूप में स्वीकार करते हैं। "इसलिए सारी मलिनता और बैर भाव की बढ़ती को दूर करके, उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो, जो हृदय में बोया गया, और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है" (याकूब 1:21)। मसीही लोगों के लिए, यीशु ने कहा कि आवश्यक है कि "... सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना" सीखो, "और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूं" (मत्ती 28:20)।

परमेश्वर ने हमें झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहने को कहा है। उसने कहा है कि बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता हैं। "हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो: वरन आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता जगत में निकल पड़े हैं" (1 यूहन्ना 4:1)। हर व्यक्ति और वस्तु को बाइबल के नाप से ही नापा जाना आवश्यक है। आपको आत्मिक रूप से स्वतंत्र केवल सत्य कर सकता है।" सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा" (यूहन्ना 8:32)।

क्या उद्धार पाना बिना बपतिस्मे के सम्भव है?

वेन मिक्की

बपतिस्मा यदि मसीह यीशु के नाम में है तो हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहें कि अनुग्रह बहुत हो? कदापि नहीं। हम जब पाप के लिये मर गए तो फिर आगे को उसमें कैसे जीवन बिताएँ? क्या तुम नहीं जानते कि हम सब जिन्होंने मसीह मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया। अत: उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।" (रोमियों 6:1-4)।

तरसुस का रहने वाला शाऊल, प्रभु की कलीसिया को सताने वाला, जो बाद में प्रेरित पौलुस के नाम से कहलाया गया। जिसने प्रभु यीशु के सुसमाचार की आज्ञा को मानकर, सच्चाई की रक्षा की। यहाँ ऊपर लिखी आयतों में हम देखते हैं कि पौलुस स्वयं को उनके साथ शामिल करता है जो मसीह यीशु की मृत्यु के बपतिस्में में उसके साथ गाड़े गए। पौलुस, अन्य पापियों की तरह, अपने पापों में मरा हुआ था जिसको अनन्त जीवन की कोई आशा नहीं थी। लेकिन जब उसने सुसमाचार की सच्चाई को जाना और उन आज्ञायों को माना तो वह परमश्वेर की सन्तान बनकर प्रभु यीशु का अनुयायी हो गया। इस विशेष क्रिया का विवरण हमें ऊपर लिखी आयतों में मिलता है कि जब हम मन फिराते है और पाप से पश्चाताप करते हैं तो हम पाप के लिए मर जाते हैं। अब हम पाप

का जीवन व्यतीत नहीं करते, हम पाप करना बिलकुल छोड़ देते हैं। यही मन फिराना और पछतावा करना है। हमारे मन और मानसिक विचारों में पाप के प्रति बदलाव।

केवल पाप के लिए मर जाना ही सब कुछ नहीं है: परन्तु यदि हमने पाप करना छोड़ दिया है इसका मतलव यह नहीं कि हम पाप से मुक्त हो गये। आवश्यक है कि वह पाप हमारे जीवन से निकाल कर हम से दूर कर दिये जाएँ। जब तक हमें उन पापों से क्षमा नहीं मिलेगी वह हमारे जीवन में बने रहेंगे और हमारी तीव्र निन्दा करते रहेंगे, हाँलाकि अब हम उनको नहीं कर रहे हैं।

प्रेरित पौलुस कहता हैं कि हम पाप के लिए मर जाते हैं। मसीह यीशु की मुत्यु का बपतिस्मा लेकर जब हम पानी की कब्र से बाहर आते हैं तो मरे हुओं में से जिलाए जाने के बाद हम एक नये जीवन की सी चाल चलते हैं। जैसे परमेश्वर ने मसीह यीशु को मरे हुओं में से जिलाया तो वह एक नई सृष्टि है, कभी ना मरने वालों के स्वरूप में रचा गया।

इसी प्रकार जब हम भी बपतिस्में के समय पानी की कब्र से बाहर आते हैं तो हम एक नए प्राणी की तरह जिलाये जाते हैं ताकि एक नए जीवन की सी चाल चलें।

बपतिस्में पर विशेष ध्यान दिया जाना: शायद आप को ऐसा लगे कि मैं बपतिस्में के विषय पर ज्यादा ही जोर दे रहा हूँ। यह आवश्यक भी हैं कि बपतिस्में के लिए दी गई आज्ञा पर विशेष ध्यान दिया जाए। कई लोग इस पर ध्यान नहीं देते या उसके महत्व को कम कर देते हैं।

कई लोगों को यह शिक्षा दी गई है कि उद्धार पाने के लिए बपतिस्मा लेना आवश्यक नहीं है। कई लोग गलत शिक्षा देते हैं कि बपतिस्मा केवल उन्ही लोगों के लिये है जिनका उद्धार हो गया हैं, पापियों के लिए नहीं है। ऐसा देखा जाता है कि ज्यादातर धार्मिक अगुवों का यह विश्वास है कि पहले मनुष्य उद्धार पाता है फिर बाद में वह चाहे तो बपतिस्मा लेले और चाहे तो न लें। कई लोग इस बात पर जोर देते हैं कि क्योंकि यह एक आज्ञा है इसलिए बपतिस्मा लेने में कोई आपत्ति नहीं हैं पर साथ ही यह शिक्षा भी देते हैं कि बपतिस्में से पहले ही हमारा उद्धार हो जाता हैं। यदि हमें प्रेरित पौलुस की शिक्षा को समझना है जिसका वर्णन रोमिंयों के 6 अध्याय में किया गया है तो हमें इस बात से सहमत होना होगा कि वह पहले बपतिस्मे की शिक्षा पर जोर देता है और दूसरी बात कि बपतिस्में का संबंध हमारे पापों की क्षमा से हैं। मैं कभी भी यह नहीं चाहूँगा कि आप ऐसा सोचें कि बाइबल यह शिक्षा देती हैं कि केवल बपतिस्मा ही हमें बचाता है परन्तु समझने की बात यह हैं कि कई लोग बपतिस्में को महत्तव नहीं देते । पर मैं यह चाहता हूँ कि आप इस बात को समझें कि बाइबल की शिक्षा यह है कि बपतिस्मा लेना एक आज्ञा है जो हमारी आत्मा के उद्धार के लिये आवश्यक हैं।

वास्तविक प्रश्न: असली प्रश्न जिस पर हम विचार कर रहें हैं कि क्या एक मनुष्य बपतिस्में से पहले उद्धार पाता है या बाद में; और क्या उसको पापों की क्षमा प्राप्त है? इस प्रश्न का सही उत्तर जानने के लिये हम देखेंगे कि बाईबल में इसके विषय में क्या लिखा है। मसीह यीशु का वचन सत्य हैं और ये ही सच्चाई है जो हम को आज़ाद करेगी।

मसीह से अलग होकर क्या हम उद्धार प्राप्त कर सकते हैं? आईये फिर से रोमियों 6 में जो लिखा है उस पर विचार करें "हम सब जिन्होंने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया, अत: उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए।" बपतिस्में के द्वारा हमारा मेल मसीह से होता है। बपतिस्मा यानि उसके साथ मारे जाना, उसकी मृत्यु में पाया जाना यदि हमारा उद्धार बपतिस्मा लेने से पहले हो जाता है, इसका अर्थ हुआ कि मसीह में आने से पहले ही हमारा उद्धार हो गया। यदि बपतिस्में से पहले ही हमने उद्धार प्राप्त कर लिया है तो इसका अर्थ हुआ हमारा उद्धार उसके साथ उसकी मृत्यु में गाड़े जाने से पहले ही हो गया। यदि ऐसा है तो जैसा प्रेरित पौलुस कहते हैं कि हम एक मरे हुये के समान गाड़े नहीं जाएँगे और न ही एक नये मनुष्य के समान जिलाये जाएँगे।

यदि हम पहले उद्धार प्राप्त कर लेते हैं तब हम एक उद्धार पाए हुए मनुष्य को गाड़ते हैं, एक जीवित मनुष्य को, न कि एक मरे हुए मनुष्य को। यदि पौलुस के वचन सत्य हैं तो यह संभव नहीं है। पौलुस शिक्षा देता हैं कि मनुष्य अपना मन फिराने, पापों से पछतावा करने के बाद पाप के लिये मर जाता है, और मसीह की मृत्यु का बपतिस्मा पाने के बाद उसके साथ गाड़ा जाता है और फिर एक नये मनुष्य के रूप में जिलाया जाता है। इस कथन की 2 कुरिन्थियों 5:17 के साथ तुलना करें, "इसलिये यदि कोई मसीह में है तो वह गई सृष्टि है।"

"अब कब मनुष्य एक नई सृष्टि कहलाता है? जब वह मसीह यीशु में पाया जाता है" लेकिन मनुष्य किस प्रकार मसीह यीशु में पाया जाता है? जब वह मसीह यीशु का बपतिस्मा लेता है। (रोमियों 6:3), इसलिये मैं फिर से इस बात को दोबारा दोहराता हूँ कि यदि कोई बपतिस्मा से पहले उद्धार पा लेता है, तो वह उद्धार मसीह यीशु से बाहर माना जायेगा क्योंकि केवल बपतिस्मा से ही हमारा संबंध मसीह से होता है और हम मसीह में नया जीवन प्राप्त करते हैं। एक नई सृष्टि कहलाते है। (2 कुरि. 5:17)।

बगैर पापों की क्षमा प्राप्त किये, क्या हमारा उद्धार हो सकता है? रोमियों की पत्री के 6 अध्याय की 17वें पद में पौलुस कहते हैं, "परमेश्वर का धन्यवाद हो कि तुम जो पाप के दास थे अब मन से उस उपदेश (सिद्धांत) के मानने वाले हो गए, जिसके साँचे में ढाले गए थे, और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए। मनुष्य को इस उपदेश को मानना चाहिये ताकि वह पाप से छुड़ाया जा सकें। वह सिद्धान्त क्या है?

पौलुस ने अभी इसको समझाया है; यह मसीह की मृत्यु, उसका गाड़ा जाना और जी उठना है। अब मनुष्य इसको हृदय से कैसे मान सकता है। पाप से मन फिरा के पाप के लिए मर जाना, मसीह यीशु को बपतिस्मा लेकर उसके साथ गाड़े जाना और फिर एक नये मनुष्य की तरह जिलाये जाने के बाद एक नए जीवन की चाल चलना।

हम देखते हैं कि यदि मनुष्य बपतिस्में से पहले उद्धार प्राप्त कर लेता है, तो इसका अर्थ हुआ कि पापों की क्षमा से पहले ही उसका उद्धार हो गया, उसने उद्धार बगैर उस उपदेश की आज्ञा को प्राप्त कर लिया, जो सत्य नहीं है और वचन के विपरीत हैं।

क्या उद्धार बगैर मसीह को पहिने या उसका बपतिस्मा लिए संभव है? "और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहन लिया है।" (गलातियां 3:27) इस पद से हम देखते हैं कि बपतिस्मा कितना अनिवार्य है। केवल बपतिस्मा ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम मसीह के पास आते हैं, इसी के द्वारा हम मसीह को पहिन लेते हैं। सो इस पद को देखते हुए हम यह निचोड़ निकालते हैं कि यह कहना सत्य नहीं होगा कि मसीह में "आने से पहिले" या उसको "बगैर पहिने" हम उद्धार प्राप्त कर सकते हैं।

क्या बगैर परमेश्वर की सामर्थ पर विश्वास किये उद्धार प्राप्त कर सकते है? "और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए और उसी में परमेश्वर की सामर्थ पर विश्वास करके, जिसने उसको मरे हुओं में से जिलाया उसके साथ जी भी उठे। (कुलुस्सियों 2:12) यहाँ हम फिर उस बात को देखते हैं कि बपतिस्में से अभिप्राय गाड़े जाने से है जिसको केवल पानी में डुबोने की क्रिया से समझा जा सकता है। फिर लिखा है कि हम मसीह के साथ उसकी मृत्यु में बपतिस्में के समय गाड़े गये।

यदि हमारा उद्धार बपतिस्मा लेने से पहले हो जाता है तो इसका अर्थ यह हुआ कि हम मसीह के साथ उसकी मृत्यु में गाड़े जाने से पहले ही उद्धार पा गये। यदि हमारा उद्धार बपतिस्मा लेने से पहले हो जाता है तो इसका अर्थ यह हुआ कि हमारा विश्वास परमेश्वर की सामर्थ पर नहीं है जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, ऐसा नहीं है। ऐसा सोचना असंभव है।

क्या बगैर पाप धुले हमारा उद्धार हो सकता है? बहुतों का यह विचार है कि शाऊल का उद्धार, दामिशक की ओर जाते हुए, रास्ते में हो गया था, परन्तु यह सत्य नहीं है। उससे कहा गया था कि वह शहर में जाये और उसको बताया जायेगा कि उसे क्या करना हैं। और हनन्याह ने उससे क्या कहां,"अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।" (प्रेरितों 22:16)।

इन बातों से अभिप्राय यह है कि यदि शाऊल का उद्धार बपतिस्मा लेने से पहले हो गया था, उसका अर्थ यह हुआ कि उसके पाप धुले बगैर ही उसका उद्धार हो गया। परन्तु क्या आप ऐसा सोचते हैं कि पानी से पाप धुल जाते हैं, नहीं, पर पाप धुलते हैं बपतिस्मा लेने से (पतरस 3:21) शुद्ध विवेक से परमेश्वर की आज्ञा मानने से। बपतिस्मा योजना के अन्तर्गत नियुक्त किया गया है जिससे मनुष्य उद्धार को प्राप्त कर सके।

पतरस ने कहा, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले।" (प्रेरितों 2:38)। बपतिस्मा का उद्देश्य पापों से क्षमा प्राप्त करना है। मसीह ने अपना लहु बहाया,"पापों की क्षमा के लिये (मत्ती 26:28) इसलिये नहीं कि पाप पहले ही धोये जा चुके थे। इसी कारण आश्वयक है कि हम बपतिस्मा लें तो हमारे पाप धुल जायें, इसलिये नहीं कि पाप धुल चुके हैं। इसलिये पुन: विचार करें कि यदि किसी का उद्धार बपतिस्में से पहले हो जाता है इसका अर्थ हुआ उसके पाप धुले बगैर उसका उद्धार हो गया जो विश्वास योग्य नहीं है।

बिना सुमसाचार के उद्धार व्यर्थ है? पौलुस ने सुसमाचार सुनाया जिसके द्वारा हमारा उद्धार होता है कि हमारे पापों के लिये यीशु मसीह मर गया, गाड़ा गया और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा। (1 कुरिन्थियों 15:1-4)

रोमियों 1:16 में पौलुस कहते हैं कि सुसमाचार हर एक विश्वास करने वाले के लिये उद्धार के निमित परमेश्वर की सामर्थ है। बपतिस्मा मसीह के सुसमाचार का एक मुख्य भाग है; क्योंकि बपतिस्में के द्वारा हीं हम मसीह की मृत्यु में उसके साथ गाड़े जाते हैं। (रोमियों 6:3, कुलुस्यिों 2:12)

उपरोक्त पदों को देखते हुयें हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि बगैर मसीह के सुसमाचार के मनुष्य उद्धार नहीं पा सकता।

क्या उद्धार, मसीह के चेलों की उस आज्ञा के बिना कि सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो, संभव है? हम देखेते हैं कि मसीह ने, इससे पहले की वह स्वर्ग को जाये, चेलों को नियुक्त किया कि जाकर संसार के तमाम लोगों को सुसमाचार प्रचार करें "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो; जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा।" (मरकुस 16:15-16) "तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।" (मत्ती 28:19) बपतिस्मा मसीह यीशु के इस आखरी विशेष सुसमाचार के कार्य को करने की आज्ञा है। हम कह सकते है कि यदि बपतिस्में से पहले किसी का उद्धार होता है तो वह हम विशेष सुसमाचार के फैलाने की आज्ञा के विरूध होगा। जो सत्य नहीं है। यदि ऐसा मनुष्य बगैर बपतिस्में के उद्धार को प्राप्त करता है तो वह मसीह यीशु की आज्ञा का उलंघन करता है।

क्या उद्धार बगैर नये जन्म के संभव है? मसीह ने यूहन्ना 3:5 में कहा, "जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्में तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। नया जन्म हमें परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कराता है। "उसने हमारा उद्धार किया और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हमने आप किए पर अपनी दया के अनुसार नए जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के हमें नये बनाने के द्वारा हुआ।" (तीतुस 3:5)।

पतरस 1:22-25 के अनुसार इसको सत्य के मानने की आज्ञा बताया गया हैं क्योंकि तुमने नाशवान नहीं पर अविनाशी बीज से, परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरनेवाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है।

पवित्र आत्मा की शिक्षा के अनुसार हमारा नया जन्म पानी में जाकर बपतिस्मा लेकर ही ऊपर आने से ही सम्पूर्ण होता है। इसका वर्णन पौलुस ने इफिसियों 5:26 में किया है "कि उसको वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध करके पवित्र बनाया।" उपरोक्त कथन से हम यह निष्कर्श निकालते हैं यदि एक मनुष्य का उद्धार बपतिस्में से पहले होता है तो वह न्या जन्म प्राप्त करने से पहले ही उद्धार पा लेता है। यदि वह बपतिस्में से पहले उद्धार पा लेता है तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने से पहले ही उसका उद्धार हो जाता हैं जो असत्य हैं।

उद्धार मसीह की देह के बाहर? "बहुत से कुरिन्थवासी सुनकर विश्वास लाए और बपतिस्मा लिया" (प्रेरितों 18:8) बाद में पौलुस ने इन कुरिन्थवासीयों को पत्र लिखा और कहा, "कि हमने एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया। आत्मा प्रमुख अंश नहीं था; यह केवल एक प्रतिनिधी था। आत्मा की आज्ञानुसार उनका बपतिस्मा हुआ था, प्रतिज्ञा के अनुसार नहीं। मसीह की देह यानी उसकी मंडली में उनका बपतिस्मा हुआ और कुलुस्सियों 1:18 पौलुस इफिसियों 1:23 में कहता है "यह उसकी देह है जो कलीसिया यानि मंडली है। इसलिये बपतिस्मा हमें प्रभु की कलीसिया में मिला देता है।

अब हम इन सब बातों का निष्कर्ष निकाले: यदि एक मनुष्य का उद्धार बपतिस्मे से पहले हो जाता है, तो वह मसीह की देह यानी कलीसिया के बाहर उद्धार पाता है, उस कलीसिया के जिसके लिये मसीह ने अपना लहु बहाया, (प्रेरितों 20:28) अपने लहु से मोल लिया। मसीह ने कलीसिया से प्रेम करके अपने आपको उसके लिये दे दिया (इफिसियों 5:25) मसीह कलीसिया का सिर है (इफिसियों 5:23)। पर यदि हमारा उद्धार बपतिस्मा लेने से पहले हो जाता है, तब हम मसीह की देह यानि कलीसिया के बाहर उद्धार पाते हैं जो सत्य नहीं है। यदि कोई बपतिस्में से पहले उद्धार पाता है तो उसका उद्धार आंशिक यानी पूरी आज्ञा माने बगैर माना जाएगा। " पुत्र होने पर भी उसने दु:ख उठा-उठाकर आज्ञा माननी सीखी; और सिद्ध बन कर अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिए सदा काल के उद्धार का कारण हो गया।" (इब्रानियों 5:8-9) यदि किसी का उद्धार बपतिस्में से पहले होता है तो यह त्रुटिपूर्ण, अधूरा, मरा हुआ कहलायेगा।

"हे निकम्मे मनुष्य क्या तू यह भी नहीं जानता कि कार्य बिना विश्वास व्यर्थ है? अत: जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है, वैसे ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है।" (याकूब 2:21, 26) निसंदेह वचन हमें सिखाता है कि "उद्धार मसीह यीशु में है" (2 तीमुथियुस 2:10) और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं" (प्रेरितों 4:12)। जब हम अपना मन फिराते है, पापों से पश्चाताप करते हैं, मसीह को पहिन लेते हैं, सुसमाचार की आज्ञा मानते है और न्या जन्म प्राप्त करते हैं तब हमारा उद्धार होता है।

मसीह यीशु उनका बचाने वाला है जो उसकी देह यानी कलीसिया में पाये जाते हैं और जिनका पूरा विश्वास उसमें और उसके वचनों में हैं।

आप यह समझ गये होंगे कि हमें बाइबल की सच्चाई को मानना है। हमें इस सत्य से भी इन्कार नहीं करना है कि हमारे उद्धार के लिये बपतिस्मा अनिवार्य है। हजारों लोग चाहे इसके विपरीत शिक्षा दे, उनका विश्वास चाहे कुछ भी हो पर बाइबल हमें यह ही सिखाती है कि हमारे उद्धार के लिये सुसमाचार की आज्ञा मानकर बपतिस्मा लेना अनिवार्य हैं। (रोमियों 6:3-4; गल. 3:27)।

अनुवादक: फैरल भाई

क्या स्त्री मण्डली में “अन्य भाषाएं” बोल सकती है?

बैटी बर्टन चोट

“पेंटिकॉस्टल” आज संसार की सबसे तेजी से बढ़ने वाली धार्मिक मूवमेटों में से एक है। इस में द असैम्बलीज ऑफ गॉड, द चर्च ऑफ गॉड, द पैंटिकॉस्टल चर्च आदि जैसी बहुत सी कलीसियाएं आ जाती हैं। मुख्य-धारा के चर्चों की कई कलीसियाओं ने भी पवित्र आत्मा के बपतिस्मे, चमत्कारों, “बोलियां” बोलने और आश्चर्यजनक ढंगों से पवित्र आत्मा के काम करने के अन्य दावों जैसी “पैंटिकॉस्टल” शिक्षाओं को अपना लिया है।

> ***विचार करने वाली बात:*** *क्या आपने यह अध्ययन किया है कि वचन चमत्कारों के इस्तेमाल, अन्य भाषाओं के बोलने, विशेष वरदानों के विषय में जो पहली सदी के चुनिंदा मसीही लोगों को दिए जाते थे, क्या कहता है? क्या आप मानते हैं कि आज के कथित चमत्कार वैसे ही है जैसे तब हुआ करते थे? क्या “टीवी” पर दिखाई जाने वाली पैंटिकॉस्टल सभाएं सचमुच में आरम्भिक कलीसिया की आराधना या प्रचार करने के अवसरों के विभिन्न हवालों से में मेल खाती हैं?*

ये कलीसियाएं “पवित्र आत्मा,” “पैंटिकॉस्ट,” “चर्च ऑफ़ गॉड” आदि जैसे बाइबल के शब्दों पर जोर देती हैं जिस कारण अधिकतर लोग उनके इतिहास, शिक्षा और परमेश्वर के वचन की तुलना में किए जाने वाले उनके कामों पर ध्यान दिए बिना, वचन के अनुसार कलीसियाएं होने के उनके दावों को सही मान लेते हैं।

यह सच है कि जब हम नये नियम को पढ़ते हैं तो वहां पता चलता है कि यीशु के स्वर्ग पर उठा लिए जाने के लगभग एक सप्ताह बाद पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के उतरने से मसीह की कलीसिया का आरम्भ हुआ था। सो इन समूहों की भाषा में इन नामों को लेकर अपने लिए इस्तेमाल कर लिया जाता है; जिस कारण वे लोग, जो हो सकता है शायद सच्चाई की खोज बड़ी गम्भीतरता से कर रहे हों, कई बार बड़ी उलझन में पड़ जाते हैं।

परन्तु समस्या यह है कि इन कलीसियाओं को मसीह ने पहली सदी में स्थापित नहीं किया था। “द असैम्बलीज ऑफ गॉड” को कई प्रचारकों तथा पूर्व मिशनरियों ने 1914 में अमेरिका के हॉट स्प्रिंग्ज, आरकैंसा नामक स्थान में संगठित किया था। “द चर्च ऑफ गॉड” जो मूलतया “द होलिनैस चर्च” हुआ करता था, का आरम्भ रिचर्ड जी, स्पर्लिंग द्वारा 1902 में मोनरो काउंटी, टैनिसी नामक स्थान में हुआ था। 1943 में टॉमलिंसन बंधुओं ने जिन्हें इसका नेतृत्व अपने पिता से विरासत में मिला था, इसकी दो शाखाएं बना दीं। दोनों शाखाओं के मुख्यालय टैनिसी राज्य के क्लीवलैंड नामक स्थान में हैं। “द पैंटिकॉस्टल होलिनैस चर्च” साऊथ कैरोलाइना राज्य में एंडर्सन नामक स्थान में 1858 में

बना था। आज दुनिया भर में सैकड़ों पैंटिकॉस्टल टाइप की कलीसियाएं हैं, जिनमें से कुछ तो संगठित हैं और कुछ स्वतन्त्र रूप में कार्य कर रही हैं। परन्तु इनमें से किसी भी गुट का आरम्भ पहली सदी में नहीं हुआ था। जिसका अर्थ है कि वे सब वह मूल कलीसिया नहीं हो सकतीं, जिसका आरम्भ यीशु ने किया था।

कलीसिया का जन्म चाहे पिन्तेकुस्त के दिन हुआ, परन्तु परमेश्वर का अपने परिवार को उस नाम से पुकारकर, उस यहूदी पर्व के दिन को महिमा-मण्डित करने का कोई इरादा नहीं था। इफिसियों 3:14, 15 हमें बताता है कि हमें "*उस पिता के सामने घुटने*" टेकने आवश्यक हैं, "*जिससे स्वर्ग और पृथ्वी पर, हर एक घराने का नाम रखा जाता है।*" प्रेरितों 4:12 कहता है कि "*स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में* [मसीह के नाम के सिवाय] *और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।*" रोम की कलीसिया को पौलुस ने लिखा कि हम मसीह के साथ ब्याहे गए हैं (रोमियों 7:4) और रोमियों 16:16 में उसने कहा कि "*तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार।*" इफिसियों 5:23-32 पति और उसकी पत्नी के बीच तथा मसीह और कलीसिया के बीच पाई जाने वाली एक सुन्दर समानता को दिखाता है।

इन आयतों से साफ पता चलता है कि पूर्ण रूप में कलीसिया और निजी तौर पर मसीही लोगों के लिए दूल्हे का यानी मसीह का नाम अपनाना आवश्यक है। वचन में कहीं पर भी कलीसिया को "पैंटिकॉस्टल" कहकर यहूदी पर्व को महिमा नहीं दी गई है। लोगों ने ऐसा करके बड़ी गम्भीर गलती की है, परन्तु फिर भी वे "पवित्र आत्मा का बपतिस्मा" पाए होने का दावा करते हैं। यदि पवित्र आत्मा उनके साथ उसी प्रकार से कार्य कर रहा होता जैसे प्रेरितों के साथ करता था, तो जो कुछ उसने पहले से नये नियम में लिख दिया था, उससे हटकर वह उन्हें ऐसी अन्य और गम्भीर गलतियां नहीं करने देता।

ये लोग पवित्र आत्मा के चमत्कारी कार्य पर इस प्रकार से ज़ोर देते हैं जैसे परमेश्वरत्व में वही प्रमुख हो, और जैसे चमत्कार करना और शारीरिक चंगाई देना ही परमेश्वर की प्रमुख चिंता हो।

> ***विचार करने वाली बात:*** *प्रेरितों के काम की पुस्तक और विभिन्न कलीसियाओं तथा लोगों के नाम लिखे पत्रों को पढ़ें और उनमें किए जाने वाले प्रत्येक आश्चर्यकर्म को लिख लें। अपनी बाइबल में इन आयतों को एक रंग से मार्क कर लें ताकि पेज पलटने पर आसानी से वे आप को दिखाई दे सकें और आपको पता चल सके कि कहां आश्चर्यकर्म हुए थे और कितने कम हुए थे।*

जब कोई खुली आंखों से नये नियम को ध्यान से पढ़ता है तो उसे पता चलता है कि नया नियम पूरा होने से पहले, पवित्र आत्मा नये नियम को लिखने और उस समय सुनाए गए वचन को दृढ़ करने के लिए प्रेरणा देने के लिए दिया गया था। परन्तु तब भी वह अपना नहीं बल्कि "मसीह का प्रचार" करने की प्रेरणा देता था और शारीरिक चंगाई केवल संदेश देने वाले की बात को पक्का करने के लिए कभी कभार हो जाती थी, क्योंकि चमत्कार करना कभी भी प्रचार करने का उद्देश्य नहीं होता था।

पिन्तेकुस्त के दिन, पतरस ने यीशु का प्रचार किया (प्रेरितों 2), फिलिप्पुस सामरिया

में यीशु और परमेश्वर के राज्य की बातें सुनाने गया (प्रेरितों 8:12), उसने खोजे को यीशु के विषय में बताया (प्रेरितों 8:35) और पौलुस अपने मनपरिवर्तन के तुरन्त बाद मसीह का प्रचार करने लगा था (प्रेरितों 9:20)। वचन में कहीं पर भी प्रचारकों ने पवित्र आत्मा के विषय पर प्रचार नहीं किया, जैसा कि आज के पैंटिकॉस्टल प्रचारक करते हैं।

इसके अलावा, सुसमाचार के विवरणों के बाद, केवल प्रेरितों के काम की पुस्तक में ही आश्चर्यकर्मों के निजी मामलों की बात मिलती है। प्रेरितों के काम में वापस जाकर वचन में आश्चर्यकर्मों की प्रत्येक घटना की चिन्हित करना आंखें खोल देने वाला होगा। बहुत से पाठक आज कलीसियाओं में इस विषय तथा "चमत्कार" होने पर दिए जाने वाले अत्यधिक बल से यह देखकर चकित रह जाएंगे कि उस विवरण में उन पर कितना कम जोर दिया गया है और किस प्रकार कुछ मामलों का उल्लेख है। पत्रियों में ही केवल पहिला कुरिन्थियों, गलातियों और इब्रानियों में आश्चर्यकर्मों का उल्लेख है। ऐसा क्यों है?

> ***विचार करने वाली बात:*** *व्यवस्थाविवरण 13:1-5 में परमेश्वर ने कहा कि झूठा नबी किसी आज्ञा के समर्थन के लिए जो उसने लोगों को दी हो जो पहले से कही गई परमेश्वर की बात का उल्लंघन हो, कोई चिन्ह या अचम्भा कर सकता था। ऐसा होने पर लोगों को ऐसे नबी की बात मानने से मना किया गया था और उन्हें आज्ञा थी कि उसे मार डाला जाए। जब "पास्टर" उसका जो नये नियम में लिखा गया है, उल्लंघन करते हुए बोलने का दावा करते और "चमत्कार" करते हैं, तो उनके साथ और उनके संदेश के साथ क्या होना आवश्यक है?*

नये नियम की पुस्तकें पूरी हो जाने से आश्चर्यकर्मों की आवश्यकता कम होती जा रही थी। जैसा कि मरकुस 16:20 में मिलता है, कि वचन के लिखे जाने और साथ-साथ होने वाले चिन्हों के द्वारा इसकी पुष्टि किए जाने के बाद आश्चर्यकर्मों का युग समाप्त होने जा रहा था।

वचन के किंग जेम्स वाले अनुवाद में "बोलियां" के उल्लेख के कारण 1 कुरिन्थियों 14 अध्याय पैंटिकॉस्टल लोगों का पसन्दीदा हवाला है। उन्होंने इन "बोलियों" का अर्थ स्वर्गीय भाषा निकाल लिया है, जिसे केवल परमेश्वर ही समझ सकता है। जिस कारण वे पवित्र आत्मा की चमत्कारी शक्ति के द्वारा आज ऐसी भाषाएं बोलने का दावा करते हैं। क्या यह सच है? पूरे हवाले को ध्यान से देखने पर पता चलेगा कि उनकी शिक्षाएं और व्यवहार दी जाने वाली स्पष्ट शिक्षाओं के बिल्कुल उलट हैं।

1. आयत 40 से आरम्भ करके पीछे को देखने पर, हमें पता चलता है कि पवित्र आत्मा प्रेरित पौलुस से "*सारी बातें शालीनता और व्यवस्थित रूप से*" किए जाने को कह रहा था। पैंटिकॉस्टल सभाएं तालियां बजाने, शोरगुल मचाने और बीच-बीच में कइयों के जोश में आने के लिए प्रसिद्ध हैं, जो कोई बात कहने या बोलियां बोलने के लिए अचानक पवित्र आत्मा से "भर जाने" का दावा करते हैं। पवित्र आत्मा ने लोगों को आज सीधे-सीधे उसका जो उसने 1 कुरिन्थियों 14:40 में लिखा था, विरोध करने के लिए नहीं उकसाना था।

2. अन्य भाषाएं बोलने और भविष्यवाणी करने की बात करती आयतों के बीच में देखें, पवित्र आत्मा की प्रेरणा से आज्ञा दी गई है, "*स्त्रियां कलीसिया की सभा में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बातें करने की आज्ञा नहीं, परन्तु अधीन रहने की आज्ञा है: जैसा व्यवस्था में लिखा भी है। और यदि वे कुछ सीखना चाहें, तो घर में अपने अपने पति से पूछें, क्योंकि स्त्री का कलीसिया में बातें करना लज्जा की बात है*" (1 कुरिन्थियों 14:34, 35)।

पैंटिकॉस्टल ग्रुप अपनी बहुत सी महिला प्रचारकों के लिए प्रसिद्ध हैं, और इस बात के लिए कि उनकी सभाओं में पुरूषों से कहीं अधिक उनकी महिलाएं "अन्य भाषाएं बोलती" हैं। वे पवित्र आत्मा की सामर्थ से बल्कि उसके नियन्त्रण में बोलने का दावा करते हैं, जैसे कि उनका अपने व्यवहार पर कोई वश न हो। परन्तु आयत 32 साफ कहती है कि पवित्र आत्मा किसी से उसकी इच्छा के विरूद्ध नहीं बुलवाएगा। सो ये लोग बोलते हैं क्योंकि उन्होंने बोलना चुना है, और जो वे बोलते या करते हैं, वह पवित्र आत्मा के द्वारा लिखित इन स्पष्ट शब्दों का सीधा उल्लंघन है। इसी तथ्य से हम यह जान सकते हैं कि पवित्र आत्मा उन्हें बोलने के लिए उकसाता नहीं है।

3. आयत 33 कहती है कि "*परमेश्वर गड़बड़ी का* (परमेश्वर) *नहीं* है। 29-32 आयतों में बताया गया है कि जो लोग भविष्यवाणी करते (यानी वचन सुनाते या सिखाते) हैं, वे बारी बारी से बोलें ताकि गड़बड़ी न हो। विभिन्न लोगों के उछलने, आत्मा का प्रकाशन होने का दावा करने, अन्य-भाषाएं बोलते हुए जोश में जाकर दूसरों को रोकने (जैसा कि पैंटिकॉस्टल कलीसियाओं में आम होता है) उनके विचार इन आयतों में जिनकी स्वयं पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरणा दी गई थी, मनाही की गई है।

4. 9, 10, 11 आयतों में इन "भाषाओं" को स्पष्ट रूप में मनुष्यों द्वारा बोली जाने वाली भाषाएं बताया गया है। आयत 9 में पौलुस पूछता है, *"ऐसे ही तुम भी यदि जीभ से साफ साफ बातें न कहो, तो जो कुछ कहा जाता है वह कैसे समझा जाएगा? तुम तो हवा से बातें करने वाले ठहरोगे!"* यही प्रश्न उसने आज "अन्य भाषाएं" बोलने का दावा करने वालों से पूछना था।

5. आयत 10 साफ कहती है कि "*जगत में कितने ही प्रकार की भाषाएं*" हैं (ध्यान दें कि वह "स्वर्गीय भाषा" की बात नहीं कर रहा) और "*उनमें से कोई भी बिना अर्थ की नहीं है।*"

6. आयत 11 कहती है कि यदि पौलुस को बोली जाने वाली किसी भाषा का अर्थ पता न हो तो उसने बोलने वाले के लिए अजनबी होना था और बोलने वाला उसके लिए अजनबी होना था। विभिन्न मानवीय भाषाओं और सुनने वालों के लिए बाहरी भाषा में बोलने के प्रश्न के विषय की बात होने पर ये सभी बातें बिल्कुल समझ में आती हैं।

7. पौलुस का निष्कर्ष था कि (आयत 12) उनमें कलीसिया की उन्नति की धुन होनी चाहिए; और आयत 19 में उसने कहा कि वह समझ में न आ सकने वाले दस हजार शब्द बोलने के बजाय, अपने सुनने वालों को समझ में आ सकने वाले पांच शब्द बोलना पसंद करेंगा। पवित्र आत्मा ने यदि उस समय पौलुस को ऐसा बातें लिखने को कह

दिया, तो किसी को कैसे लग सकता है कि आज ऐसी "भाषाएं" जिनका किसी के लिए भी कोई अर्थ नहीं है, बोलने के लिए उक्साने वाला पौलुस ही है और इससे गड़बड़ी छोड़ और कुछ नहीं मिलता? यह सब इस अध्याय का सीधा-सीधा उल्लंघन है।

विचार करने वाली बात: *यदि आप टैलिविजन पर "पैंटिकॉस्टल" कार्यक्रमों को देखें तो इनमें नोट करें कि "पवित्र आत्मा" कितनी बार बोला गया। "परमेश्वर" और "यीशु" शब्दों को भी नोट करें कि कितनी बार बोला गया। फिर इसे प्रेरितों के काम की पुस्तक में लिखित प्रवचनों से मिलाएं।*

1 कुरिन्थियों 14 अध्याय में पौलुस के सामने वास्तविक परिस्थिति क्या थी? प्रेरितों के काम 2 अध्याय में वापस जाने पर हमें पता चलता है कि प्रेरितों 1:5 में यीशु की प्रतिज्ञा के अनुसार, प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया गया। आत्मा के इस बपतिस्मे से वे हर प्रकार के आश्चर्यकर्म करने के योग्य बन गए। क्योंकि उन्हें चमत्कारी ज्ञान, बुद्धि, परख, अनेक प्रकार की भाषाएं बोलने की सामर्थ, जिन्हें उन्होंने सीखा नहीं था, बीमारों के चंगा करने की शक्ति, दुष्ट आत्माओं को निकालने की शक्ति और यहां तक कि मुर्दों को जिलाने की शक्ति दी गई। प्रेरितों 5:16 कहता है कि प्रेरितों के पास लाए गए सब लोगों को चंगा किया जाता था। उनके साथ ऐसा कभी नहीं हुआ कि उन्हें किसी को चंगाई न दे पाने पर यह बहाना बनाना पड़े कि बीमार व्यक्ति का विश्वास नहीं था, जैसा कि आज के कथित "विश्वास से चंगाई देने वाले" करते हैं। प्रेरितों के आश्चर्यकर्म तात्कालिक और पूर्ण होते थे, न कि बीमार व्यक्ति के "किस्तों में चंगा" होने के, जैसा कि आज दावा किया जाता है।

प्रेरितों 5:32 चाहे साफ कहता है कि परमेश्वर अपने सब आज्ञा मानने वालों को पवित्र आत्मा देता था, परन्तु आश्चर्यकर्म केवल प्रेरित ही कर सकते थे! कई हजार लोगों ने बपतिस्मा लिया था और वे मसीही बने थे, परन्तु आयत 12 बताती है कि *"प्रेरितों के हाथों से बहुत चिन्ह और अद्भूत काम लोगों में दिखाए जाते थे।"*

प्रेरितों को छोड़ और कोई भी तब तक आश्चर्यकर्म नहीं कर सकता था जब तक प्रेरितों ने कुछ मसीही लोगों को चुन कर (जो पहले से पवित्र आत्मा से परिपूर्ण थे; प्रेरितों 6:3) उन्हें विशेष रूप से एक-एक को दान देते हुए उनके ऊपर हाथ नहीं रखे। ये लोग वे सब काम कर सकते थे जिन्हें प्रेरित कर सकते थे, परन्तु एक व्यक्ति को कोई विशेष भाषा बोलने की शक्ति, किसी दूसरे को किसी दूसरी भाषा में बोलने की शक्ति, किसी और को बीमारों को चंगाई देने की शक्ति, किसी अन्य को चमत्कारी ज्ञान, किसी को मण्डलियों में अलग-अलग भाषाएं बोलने वाले लोग होने के कारण भाषा का अर्थ बताने की शक्ति, किसी और को भविष्यवाणी का दान आदि मिलता था।

1 कुरिन्थियों 12:8-10 में साफ दिखाते हुए कि एक मसीही को एक दान, किसी दूसरे मसीही को कोई और दान दिया जाता था, ताकि वे नया नियम लिखे जाने से पहले के उस समय की अपनी आत्मिक उन्नति में एक दूसरे के ऊपर निर्भर हों, दोनों की पूरी सूची दी गई है। कुछ मामलों में ऐसे अर्थ बताने वालों की आवश्यकता थी (ऐसा कोई मामला नहीं मिलता जहां प्रेरित को अनुवादक की आवश्यकता हो, जो इस बात का प्रमाण

है कि जहां भी वे जाते थे, पवित्र आत्मा उन्हें वहां की भाषा बोलने में सक्षम बना देता था)।

यह स्पष्ट है कि किसी मसीही को जो अपने जन्म स्थान पर न रह रहा हो, चमत्कारी ढंग से स्थानीय भाषा का ज्ञान दिया जा सकता था। परन्तु यदि वह किसी और जगह जाता जहां कोई और भाषा बोली जाती हो, वहां हो सकता था कि "उस पर हाथ" रखने के लिए कोई प्रेरित न हो। ऐसी स्थिति में चमत्कारी दान जो पहले से उसके पास था तभी उपयोगी था यदि उस मण्डली के किसी व्यक्ति के पास अर्थ बताने का चमत्कारी दान हो, ताकि उसकी अब "बाहरी" भाषा का अनुवाद स्थानीय लोगों की भाषा हो सके।

कहने का मतलब यह है कि हमें यह समझना आवश्यक है कि वचन साफ बताता है कि जब किसी व्यक्ति को "अन्य भाषाएं" बोलने का दान दिया जाता था तो इसका अर्थ यह होता था, कि किसी एक भाषा का ज्ञान आश्चर्यकर्म ढंग से दिया गया था, जो कि साफ है कि दान किए जाने के समय उसे उसकी आवश्यकता थी। उसे सब बातों का ज्ञान नहीं दिया जाता था, न ही ऐसा है कि वह जहां जहां जाता हो वहां की भाषा अपने आप बोलने लगता हो। यदि ऐसा होता तो अनुवाद करने की आवश्यकता न होती। परन्तु सताव के बाद और मसीही लोगों के एक से दूसरी जगह बदलते रहने के कारण भाषा का ज्ञान और भाषा का अर्थ बताना दोनों आवश्यक थे।

इस संदर्भ में पौलुस ने चमत्कारी "भाषाओं" के उपयोग की कई बातें बताई:

ऐसी भाषा बोलने वाले जिसकी समझ स्थानीय मसीही लोगों को न हो, जानते थे कि उनका दान परमेश्वर की ओर से है और परमेश्वर इस बात को समझता था कि वे क्या कह रहे हैं (और आज के "अन्य भाषाएं" बोलने के विपरीत जब बोलने वाले को ही पता नहीं होता कि वह क्या कह रहा है, आयत 4 में पौलुस ने कहा कि उस समय का बोलने वाला अपनी उन्नति करता था यानी उसे मालूम होता था कि वह क्या कह रहा है), परन्तु सुनने वालों के लिए इसका कोई वास्तविक लाभ तब तक नहीं था जब तक कोई उन्हें उसका अर्थ न समझाए (1 कुरिन्थियों 14:2)। सच्चाई की उसकी अपनी समझ जिसे वह समझा रहा था, सुनने वालों की समझ से बाहर थी, सो सुनने वालों के मनों पर इसका कोई फल नहीं आ सकता था (आयत 14)।

उन्हें तब तक "अन्य भाषाएं" बोलने से मना किया गया जब तक कोई उसका अर्थ बताने वाला न हो (आयत 28), क्योंकि यदि बोली गई "अन्य भाषाएं" सुनने वालों को समझ नहीं आतीं तो मण्डली में आने वाले अविश्वासियों में यही लगता कि यह लोग पागल हैं (आयत 23)।

इसके बजाय उन्हें भविष्यवाणी के दान यानी प्रचार करने के दान की इच्छा करने को कहा गया, क्योंकि इससे सुनने वालों की उन्नति, शिक्षा और शांति होनी थी। यह वह संदेश था जो सब सुनने वालों को समझ आ सकता था। किसी भी बोलने वाले का प्रमुख उद्द्देश्य अपने सुनने वालों की उन्नति होता है न कि यह कि लोग उसके

अभिनय को सराहें (आयतें 1, 5)।

इन आयतों के विश्लेषण से हम देख सकते हैं कि आज के कथित पैंटिकॉस्टल लोगों द्वारा जो भी किया जाता है, यह वास्तव में 1 कुरिन्थियों 14 में पौलुस के द्वारा बताई बातों से बिल्कुल अलग है। वास्तव में कई बातों पर आज की जाने वाली बातें पवित्र आत्मा की अगुआई से दिए पौलुस के निर्देश का बिल्कुल उल्लंघन है। हम जानते हैं कि पवित्र आत्मा पवित्र शास्त्र में एक बात कहने के बाद आज उसके विपरीत कोई बात नहीं कहेगा। सो जो लोग आत्मा की सामर्थ से ऐसी बातें करने का दावा करते हैं वे झूठे दावे कर रहे हैं। निश्चय ही उनकी नीयत साफ है परन्तु उन्हें पवित्र शास्त्र का ज्ञान नहीं है और वे भ्रमित हैं क्योंकि वे वही करते हैं जैसे उन्हें सिखाया गया है।

नहीं, आज कलीसिया की सभा में स्त्रियां "अन्य भाषाएं" नहीं बोल सकतीं। वास्तव में इसकी कभी भी अनुमति थी ही नहीं। प्रेरितों के युग में भी नहीं, जब भाषाओं का दान वास्तव में होता था।

"जिस का वर्णन तुम उस सुसमाचार के सत्य वचन में सुन चुके हो" (कुलुस्सियों 1:5)

ऑवन डी. आल्ब्रट

"सत्य" (aletheia) पूर्ण तथ्य या पूरी तरह से विश्वासनीय जानकारी को कहा गया है जो उसके विपरीत है जो झूठ और अविश्वसनीय है। सत्य वचन का सुसमाचार नये नियम की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। मत्ती और मरकुस ने यह नहीं लिखा कि यीशु ने "सत्य" शब्द का इस्तेमाल किया, बल्कि लूका ने उसे यह कहते हुए दोहराया, "मैं तुम से *सच* कहता हूं कि एलिय्याह के दिनों में जब ... सारे देश में बड़ा अकाल पड़ा तो इस्त्राएल में बहुत सी विधवाएं थी" (लूका 4:25)। अपनी भूमिका में यूहन्ना ने जोड़ा कि यीशु सत्य का देने वाला है और जो लोग सत्य पर अमल करते हैं वे ज्योति के पास आते हैं (यूहन्ना 1:14, 17; 3:21)।

यीशु सत्य का देने वाला है (यूहन्ना 14:6; इफिसियों 4:21)। व्यवस्था वास्तविकता की छाया थी (इब्रानियों 10:1, 2), परन्तु यह वास्तविक देह नहीं थी (कुलुस्सियों 2:17)। मूसा के द्वारा व्यवस्था दी गई परन्तु यीशु के द्वारा अनुग्रह और सच्चाई दी गई। यीशु ने सत्य की गवाही दी (यूहन्ना 18:37) और सत्य की उसकी व्यक्तिगत शिक्षा यूहन्ना की शेष पुस्तक में है।

सत्य के महत्व को इस तथ्य में देखा जा सकता है कि परमेश्वर की आराधना सत्य के अनुसार होनी आवश्यक है (आयत 5ख; यूहन्ना 4:23, 24)। लोगों को सत्य के द्वारा पाप से मुक्त किया जाता है (यूहन्ना 8:32), और सत्य के द्वारा हृदय को शुद्ध किया जाता है (1 पतरस 1:22)। झूठ शैतान की ओर से आता है, क्योंकि उसमें कोई सत्य नहीं है (यूहन्ना 8:44)। आत्मिक सत्य केवल उसी में मिल सकता है जो सत्य

के आत्मा, पवित्र आत्मा के द्वारा प्रकट किए गए के रूप में परमेश्वर के वचन में लिखा गया है। जो लोग यीशु की शिक्षा में बने रहते हैं वे सत्य को जान सकते हैं। कई झूठे शिक्षक संसार में निकल आए हैं (1 यूहन्ना 4:1) परन्तु मसीही लोग जिन पर परमेश्वर ने सत्य प्रकट किया है उन के वचनों के द्वारा उनकी शिक्षाओं को जांच सकते हैं (1 यूहन्ना 4:6)। परमेश्वर का न्याय सत्य के अनुसार होगा (रोमियों 2:2; KJV NKJV; NIV)।

पौलुस द्वारा आयतें 5ख 6, 9 और 23 में दोहराया गया अपने पाठकों को याद दिलाने के लिए था कि उनको विश्वास और आशा परमेश्वर के वचन के मौखिक व्यवहार के द्वारा मिला था। उनका विश्वास और आशा लिखित दस्तावेजों के आधार पर नहीं बल्कि उसी आधार पर था जो उन्होंने सुना था।

"सुसमाचार" (1:5)

सुसमाचार के लिए यूनानी शब्द (euangelion) का अर्थ है "अच्छी खबर।" पौलुस के पत्रों में यह महत्वपूर्ण शब्द है, जो लगभग साठ बार मिलता है। सुसमाचार में यीशु की मृत्यु, दफनाए जाना, और जी उठना शामिल हैं (1 कुरिन्थियों 15:1-4)। परन्तु एक वास्तविकता के रूप में अपनी मृत्यु, दफनाए जाने, और जी उठने की खबर सुनाए जाने से पहले यीशु ने कहा कि सुसमाचार सुनाया जा चुका था (मत्ती 11:5)। उस समय जो "अच्छी खबर" सुनाई जा रही थी वह यह थी कि स्वर्ग का राजय निकट है (मत्ती 4:17)। यह मसीह के राज्य का "सुसमाचार" था जो शीघ्र ही स्थापित होने वाला था (मत्ती 4:23; 9:35; मरकुस 1:14)। लूका ने जिस शब्द का इस्तेमाल किया जिसका अर्थ है "सुसमाचार का प्रचार" (लूका 4:18; देखें 3:18; 4:43); परन्तु उसने संज्ञा शब्द "सुसमाचार" का इस्तेमाल नहीं किया। यूहन्ना ने भी इसे शामिल नहीं किया; परन्तु "सुसमाचार" शायद सत्य के साथ मिलाया जाना चाहिए (देखें इफिसियों 1:13) जिसे यूहन्ना ने बार-बार इस्तेमाल किया।

वास्तव में सुसमाचार यीशु की मृत्यु, दफनाए जाने, और जी उठने से अलग है। पौलुस ने लिखा कि कुलुस्से के लोगों ने "सुसमाचार के सत्य वचन" में स्वर्ग के बारे में सुना था। पौलुस ने पतरस का उसके मुंह पर सामना किया ताकि "सुसमाचार की सच्चाई" गलातियों के साथ मजबूती से बन सके (गलातियों 2:5, 14)। पौलुस ने उसका विरोध इसलिए नहीं किया कि वह यीशु की मृत्यु, दफनाए जाने, और जी उठने के ढंग को सही ढंग से नहीं मान रहा था। बल्कि इसलिए किया, क्योंकि उसने अन्यजाति मसीही लोगों से अपनी संगति तोड़ ली थी। ऐसा व्यवहार करके वह सुसमाचार की सच्चाई के अनुसार नहीं चल रहा था। सुसमाचार में मसीही लोगों के जीने का ढंग शामिल है (फिलिप्पियों 1:27), जिसमें पापपूर्ण व्यवहार से बचना शामिल है (1 तीमुथियुस 1:10,11)। सुसमाचार वह सारी सच्चाई है, जिसे यीशु ने प्रकट किया है।

सुसमाचार का एक पहलू उद्धार पाने के लिए आरम्भिक शर्तें हैं। पौलुस ने कहा कि सुसमाचार "उद्धार के निमित्त" परमेश्वर की "सामर्थ" है (रोमियों 1:16) और इसे हर व्यक्ति को सुनाया जाना आवश्यक है (मरकुस 16:15)। जिन्होंने विश्वास करके

इसे माना है और बपतिस्मा लेकर उद्धार पाया है। (मरकुस 16:16)। यीशु उन से जो सुसमाचार को नहीं मानते, बदला लेगा और उन्हें कभी न खत्म होने वाला दण्ड देगा (1 थिस्सलुनीकियों 1:7-9)।

“आपने सुना होगा”

जॉन स्टेसी

आपने यह कहते सुना होगा कि उद्धार पाने के लिये बपतिस्मा लेने की कोई आवश्यकता नहीं है। कहा जाता है कि बपतिस्मा तो केवल एक निशान मात्र है। हो सकता है कि आपने स्वयं भी किसी प्रचारक से बपतिस्मा लिया हो जिसने यह कहकर आपको बपतिस्मा दिया हो कि आप बपतिस्मा इसलिये ले रहे हैं, “क्योंकि परमेश्वर ने मसीह के कारण आपके पापों को क्षमा कर दिया है।” लेकिन ऐसी शिक्षा बाइबल की नहीं है। बाइबल की शिक्षानुसार बपतिस्मा किस लिये लिया जाना चाहिए? यीशु ने मरकुस 16:16 में कहा था, “जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।” पतरस ने, प्रेरितों 2:38 में, लोगों से कहा था कि मन फिराओ और तुम में से हर अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले। पतरस ने यह बात पवित्रात्मा की प्रेरणा से कही थी। फिर हम बाइबल में पढ़ते हैं कि जब शाऊल (पौलुस) दमिश्क में था तो हनन्याह ने उसके पास आकर उससे कहा था कि “अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा लें, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।” (प्रेरितों 22:16)। अब इससे अधिक स्पष्ट और क्या बात कही जा सकती है? यहां हमें बताया गया है कि हमारे पाप कब धुलते हैं। फिर, प्रकाशितवाक्य 1:5 में यूहन्ना हमें बताता है कि मनुष्य के पाप किस प्रकार धुलते हैं, लिखा है,“...जिस ने अपने लोहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है।” पानी से हमारे पाप नहीं धुल सकते। 1 पतरस 3:21 में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, “और उसी पानी का दृष्टान्त भी अर्थात् बपतिस्मा यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा तुम्हें बचाता है (उस से शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है।)” केवल बपतिस्मा ही लेने से किसी भी व्यक्ति का उद्धार नहीं हो सकता। परन्तु बपतिस्मा लेने से पहले विश्वास करना, और मन फिराना, और मसीह को परमेश्वर का पुत्र मानना भी आवश्यक है, और ऐसा करके बपतिस्मा लेने से मनुष्य का सम्बन्ध मसीह और उसके लोहू के साथ हो जाता है, और इस प्रकार मसीह का लोहू उसके पापों को धो डालता है। यदि आप ने सही उद्देश्य के लिये अभी तक बपतिस्मा नहीं लिया है। तो देरी न करें परमेश्वर के वचन के साथ आनाकानी करना अच्छा नहीं है। मनुष्यों की शिक्षाओं पर चलकर आपका उद्धार नहीं हो सकता।